प्रथम दीक्षांत समारोह – 15 अक्टूबर 2019

डॉ० रामेश्वर सिंह, कुलपति

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय का स्वागत भाषण एवं रिपोर्ट

महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति बिहार, श्री फागु चौहान, माननिय कृषि–सह–पशु एवं मत्स्य संसाधन मंत्री डॉ० प्रेम कुमार जी, सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक पूर्व महा निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, डॉ० मंगला राय जी, पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के सचिव, डॉ० एन० विजयलक्ष्मी जी, सेंटर फ़ॉर डिज़ीज़ कंट्रोल, एटलांटा (USA) के वरीय वैज्ञानिक व हमारे पूर्व विद्यार्थी डॉक्टर शौक़त कारी, प्रबंधन बोर्ड व अकादमिक परिषद के सम्मनित सदस्यगण, राज्य सरकार के विशिष्ट पदाधिकारी, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के वरिष्ठ पदाधिकारी, वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों, आमंत्रित अतिथियों, विशेषकर आज के दिन उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यर्थियों और उनके परिजनों, सेवानिवृत प्राध्यापक व कर्मचारीगण, प्रेस एवं मीडिया के प्रतिनिधि, देवियों एवं सज्जनों, विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह में मैं आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूँ, अभिनंदन करता हूँ।

आज, 15 अक्टूबर 2019 बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के लिए एक ऐतिहासिक दिन है। हम अपने पहले दीक्षांत समारोह को मनाने के लिए यहां एकत्रित हैं। सन 1927 में बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय के रूप में स्थापना हुई और विभिन्न विश्विद्यालयों के साथ अपना सफ़र आगे बढ़ाते हुए प्रदेश के दूरदर्शी मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी के नेतृत्व में बने तीसरे कृषि रोड मैप के लक्ष्य के अनुरूप 29 अगस्त 2016 में बिहार पशु विज्ञान विश्विद्यालय अधिनियम पारित किया गया और 13 जून, 2017 से विश्वविद्यालय ने अपना कार्य प्रारम्भ किया। वर्ष 1981 में

संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना हुई जो हमारी दूसरी इकाई है और इस नवगठित विश्वविद्यालय की तीसरी इकाई के रूप में 2018 में मात्स्यिकी महाविद्यालय, किशनगंज की स्थापना की गयी। मात्स्यिकी महाविद्यालय का गठन भी बिहार कृषि रोड मैप के अंतर्गत परिलक्षित किया गया था। इसी वर्ष मार्च के महीने में कृषि विज्ञान केंद्र, जमुई को बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के अधीन अंतरित किया गया। इस बीच में 2018 और 2019 में बीटेक (डेयरी टेक्नोलोजी), बैचलर आफ वेटरिनेरी साइंस एंड एनिमल हसबैंडरी और मास्टर आफ वेटरिनेरी साइंस में उत्तीर्ण विद्यार्थी उपाधि की पात्रता पूरी कर चुके हैं। मैं इस प्रथम दीक्षांत समारोह में उनका स्वागत करता हूं और उन्हें बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय की डिग्री के पहले प्राप्तकर्ता होने के विशेष गौरव के लिए बधाई देता हूं। यह उनके जीवन का एक महत्वपूर्णक्षण है।

पहले दीक्षांत समारोह के अवसर पर आपको संबोधित करना मेरे लिए बहुत बड़ा सोभाग्य है। हम उन महान वैज्ञानिकों और विद्वानों को गर्व के साथ याद करते हैं जिनके योगदान ने इस संस्था को आकार दिया है। उनकी प्रेरणा हम सभी को शक्ति प्रदान करती है। आज हम एक स्वायत्त विश्वविद्यालय हैं, यह इस असाधारण नींव पर निर्माण का समय है। विश्वविद्यालय बनने के बाद हम भारत के विभिन्न राज्यों के प्रतिभाशाली और समर्पित शोधकर्ताओं और शिक्षकों को आकर्षित करने में सफल रहे हैं। विश्वविद्यालय ने अपने पहले अधिकारियों—कुलसचिव, उप—कुलसचिव, वित्त—नियंत्रक, अधिष्ठाता वेटनरी, अधिष्ठाता डेयरी, निदेशक छात्र कल्याण, निदेशक अनुसंधान, सम्पदा पदाधिकारी, निदेशक कार्य एवं संयंत्र, सहायक वित्त नियंत्रक, सहायक अभियंता, सहायक सुरक्षा अधिकारी तथा audio-visual technician-cum-photographer की नियुक्ति की गयी। हम देश के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिष्ठित विशेषज्ञों के आभारी हैं जिनकी उपस्थिति ने विश्वविद्यालय में

वरिष्ठ पदों के लिए सर्वश्रेष्ठ आवेदकों का चयन सुनिश्चित किया। हम शिक्षक और शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के रिक्त पदों को भरने की प्रक्रिया में हैं और शीघ्र ही नयी नियुक्तियाँ कर ली जाएँगी। इस दौरान कर्मचारियों के वेतन सुरक्षा, उच्च योग्यता के लिए वेतन वृद्धि, पिछली सेवा की गिणती, पी०एचडी० के लिए अध्ययन अवकाश जैसे लम्बित मामलों का पूर्ण निराकरण किया गया। संविदाकर्मियों की सेवाए नियमित की गयी तथा अनुकंपा के आधार पर लम्बित नियुक्तियाँ की गयी हैं।

हमारे विश्वविद्यालय की स्थापना, प्रदेश में पशुधन, डेयरी व मत्स्य के क्षेत्र में उच्च शिक्षा तथा अनुसन्धान का उत्थान करने हेतु किया गया है। इन दो वर्षो में हमने शिक्षा की गुणवक्ता सुधारने के लिए विशेष कदम उठाये, जिसके हमें बहुत उम्दा नतीजे मिल रहे हैं। हमारी परीक्षा प्रणाली अनुकरणीय दक्षता के साथ कार्य कर रही है, सभी परीक्षाओं के परिणाम कुछ ही दिनों के भीतर प्रकाशित किए गए हैं और ग्रेड कार्ड तुरंत उपलब्ध किए गए हैं। यूनिवर्सिटी के संक्षिप्त इतिहास में कुछ मील के पत्थर हैं जिन पर हम सभी को गर्व है, मैं उन का यहाँ उल्लेख करना चाहूँगा।

- वर्तमान में विश्वविद्यालय के तीन महाविद्यालयों में 395 विद्यार्थी स्नातक स्तर पर, 44 स्नातकोत्तर एवं 14 विद्या वाचस्पति (Ph.D) की उपाधि के लिए अध्ययन कर रहे हैं।
- प्रशासनिक कार्यो का सुदृढ़ एवं सुचारू रूप से कार्यान्वयन के लिए बायोमीट्रिक मशीन द्वारा उपस्थिति, अकादमिक कैलेंडर का क्रियान्वयन, परीक्षा पात्रता हेतु कक्षा में अनिवार्य उपस्थिति, परीक्षा प्रणाली में सुधार, वेटेरनरी महाविद्यालय में प्रवेश के समय surety bond ,कदाचार मुक्त परीक्षा

का संचालन तथा विश्वविद्यालय एवं छात्रावास के नियमों इत्यादि को अपनाकर पूर्ण रूप से अनुपालन किया जा रहा हैं।

- ई.गवर्नेन्स के क्षेत्र में लगातार प्रगति की जा रही है, National Knowledge Network के माध्यम से 50MBPS की इन्टरनेट कनेक्टिविटी उपलब्ध की गई है तथा लोकल एरिया नेटवर्क का कार्य तेज़ी से चल रहा है, वेतन व पेंशन का भुगतान सॉफ़्टवेयर के द्वारा किया जा रहा है। National Informatics Centre के माध्यम से 'चाणक्य' ऑन—लाइन अकादमिक सिस्टम लागु कर दिया गया है और अगले चरण में ई—ऑफिस को पूर्णरूप से प्रभावी किया जायेगा।

- हमने देश—विदेश के संस्थानों के साथ सम्बन्ध स्थापित किए हैं। कई राष्ट्रिय एवं अन्तराष्ट्रीय संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन किया है जिसका उद्देश्य परस्पर कार्यों के द्वारा शोध एवं शिक्षा की गुणवक्ता में इजाफा करना है। इनमें कुछ प्रमुख संस्थानों के नाम इस प्रकार हैं:

➢ भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज़्ज़तनगर
➢ राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल
➢ भारतीय कृषि कौशल परिषद्, नई दिल्ली
➢ केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार
➢ राष्ट्रिय अश्व अनुसन्धान केंद्र, हिसार
➢ केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर
➢ केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई
➢ केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचीन इत्यादि।

- उल्लेखनीय है कि वन्य जीवों पर अनुसन्धान करने हेतु पटना चिड़ियाघर के साथ समझौता–ज्ञापन किया गया है। हमें यह बताते हुए काफी ख़ुशी हो रही है कि हम “वन्य प्राणी फोरेंसिक प्रयोगशाला व स्वास्थ्य केंद्र” की स्थापना वन विभाग के माध्यम से करने जा रहे हैं। जनवरी, 2020 में हमारे वैज्ञानिकों को वाइल्ड लाइफ इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडिया व ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी में वन्य प्राणियों के अध्ययन में प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- राष्ट्रिय स्तर पर पहल करते हुए विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों ने “आपदा प्रभावित क्षेत्रों में पशुधन प्रबंधन” पर चार दिवसीय प्रशिक्षण हेतु विशेष पाठ्यक्रम तैयार किया गया तथा बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के तत्वावधान में प्रशिक्षण श्रृंखला चलाकर राज्य के 1180 पशु चिकित्सकों को प्रशिक्षित किया गया।
- प्लेसमेंट सेल, प्रशिक्षण सेल, शिकायत निवारण प्रकोष्ठ, तथा अलुमिनाई सेल प्रारंभ किये गए हैं। नतीजतन छात्रों को सरकारी व गैर.सरकारी उपक्रमों में कैंपस सिलेक्शन के तहत अच्छे रोज़गार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं।
- वरीय छात्र विश्वविद्यालय में प्रवेश के समय नए विद्यार्थियों का स्वागत तथा मार्गदर्शन कर रहे हैं तथा उन्होंने बड़े उत्साह से दीक्षारंभ कार्यक्रम में भाग लिया और नए विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों के लिए परिसर भ्रमण का आयोजन अपने से किया।
- भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् से हमें National Agricultural Higher Education Project हासिल करने में कामयाबी मिली हैस इस योजना के तहत 09 कार्यशालाओं एवं 10 सेमिनार का आयोजन किया गया।

इस परियोजना के तहत छात्रों एवं अध्यापकों को विदेशों में प्रशिक्षण व अनुसन्धान की व्यवस्था की जा रही है।

- इलेक्ट्रोनिक्स व सूचना तकनीकी मंत्रालय से "Krishi Mantrana- An Ai Based Multimodal Dialog-System for Farmers" परियोजना 22 लाख रुपए के अनुदान के साथ स्वीकृत की गयी है।
- ICAR, नई दिल्ली के नेशनल एग्रिकल्चर साइंस फ़ंड के द्वारा उत्तर बिहार के आदिवासी क्षेत्रों में पशुधन विकास हेतु कम लागत के नए मॉडल पर अनुसंधान हेतु 01 करोड़ 25 लाख रुपए की परियोजना स्वीकृत हुई है।
- पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग की पहल पर भारत सरकार से "भ्रूण प्रत्यारोपण परियोजना" स्वीकृत हुई है। इस परियोजना के अंतर्गत ज्यादा दूध देनेवाली देसी गाय के त्वरित प्रजनन का कार्य भ्रूण प्रत्यारोपण से किया जाएगा। इस परियोजना से हमारे छात्रों के शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान की मजबूत नीव रखने तथा गुणवत्ता बढाने में सफलता मिलेगी।
- गत वर्ष में विश्वविद्यालय ने 04 नेशनल कांफ्रेंस का आयोजन कियाए जिसमें देश व विदेश के जाने—माने वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया।
- मुझे यह बताते हुए आपार हर्ष हो रहा है कि हमारे विश्वविद्यालय में देश का पहला "एनिमल वर्चुअल डिसेक्शन टेबल" लगाया है, मानव चिकित्सा में यह सुविधा भारत में कुछ मेडिकल संस्थानों के उपयोग में है परंतु पशुविज्ञान के क्षेत्र में यह उपकरण पुरे भारत में पहला है, जिसे बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय के शरीर रचना विभाग में लगाया गया है। इस

तकनिकी के आने से छात्रों को पशु शरीर रचना और शल्य चिकित्सा को समझाने में आसानी होगी।

- बिहार सरकार, वित्त विभाग के निर्देशानुसार विश्वविद्यालय में क्रय प्रक्रिया जेम पोर्टल के माध्यम से की जा रही है, जिसमें विगत वर्ष में हमने प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।
- रोस्टर निर्बाधन की प्रक्रिया में रिक्त शैक्षणिक पदों पर बहाली का कार्य प्रगति पर है, इन पदों पर भर्ती के साथ ही विश्वविद्यालय में स्वीकृत सभी पद भर दिए जायेंगे।
- स्वच्छ परिसर विकसित करने हेतु लक्षित 74 नए प्री–फैब्रिकेटेड शौचालय का निर्माण किया जा चूका है, जिसमें टाटा फ़ाउंडेशन से कारपोरेट सोशल रिस्पोंसीबिलिटि के तहत कुल लागत का 60% अनुदान प्राप्त हुआ है। वन महोत्सव के अवसर पर बड़ी संख्या में पेड़ लगाने के लिए हमारे कार्य को बिहार सरकार द्वारा सराहा गया है।
- पुराने भवनों का जीर्णोद्धार कराकर उन्हें बहु–उपयोगी बनाया गया है।
- वेटरनरी क्लिनिकल काम्प्लेक्स में डायग्नोस्टिक सुविधाओं को सुदृढ़ किया गया है तथा आधुनिक उपकरणों की व्यवस्था करने का कार्य प्रगति पर है।
- इंडोर चिकित्सा की सुविधा शुरू की गई है, जिसमें चिकित्सा के सभी उपकरण, आधुनिक डायग्नोस्टिक लैब, हर तरह के ऑपरेशन की सुविधाएं, इंटेंसिव केयर यूनिट और किसानों के ठहरने की व्यवस्था भी की गई है।

- सूर्य से बिजली उत्पादन हेतु 310 किलोवाट क्षमता के रूफ टॉप सोलर पैनल भवनों पर लगाए गए हैं। इसके अतिरिक्त 264 किलोवाट क्षमता वाले नए संयंत्र के लिए BREDA से प्रस्ताव स्वीकृत है।
- नए आधारभूत संरचनाओं में दो–मंज़िला अकादमिक भवन एवं लिफ़्ट सुविधा युक्त चार–मंज़िला आधुनिक पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है।
- विश्वविद्यालय स्तर पर प्रबंधन बोर्ड, विद्वत परिषद्, शोध परिषद्, प्रसार शिक्षा परिषद् एवं वित्त समिति बनाई गई है तथा जरुरत को ध्यान में रखकर समय–समय पर बैठकें आयोजित करके विभिन्न कार्यों का निष्पादन किया जाता है।
- प्रदेश सरकार के सहयोग से सिपाया (गोपालगंज) में एक नया भैंस प्रजनन प्रक्षेत्र प्रारम्भ किया जा रहा है, इसके लिए लगभग 90 एकड़ भूमि का आवंटन किया गया गया है।
- आगे पशु चिकित्सा शिक्षा का विस्तार करने हेतु प्रदेश का दूसरा पशुचिकित्सा महाविद्यालय, किशनगंज में प्रस्तावित है, जो प्रक्रियाधीन है।
- प्रदेश में अनूठी पहल करते हुए विभिन्न स्थानों पर पशु विज्ञान केंद्रों की स्थापना करने के बारे में प्रक्रिया चल रही है।
- मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हम बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के सभी वैज्ञानिकए शोधकर्मीए विद्यार्थी तथा कर्मचारी एकजुट होकर राज्य को अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देंगे।
- मैं अपना वक्तव्य ख़त्म करने से पहले महान दार्शनिक अरस्तु के ये शब्द दोहराना चाहूँगा – “Education is an ornament in prosperity and a

refuge in adversity” सरल शब्दों में कहूँ तो–शिक्षा समृद्धि में एक आभूषण और आपदा में शरण स्थल है। हमारे जीवन के गहनतम अंधकार में शिक्षा रौशनी लेकर आता है।

- मेरे प्यारे छात्रों, मुझे यकीन है कि विश्वविद्यालय से हासिल हुई ये रौशनी जिंदगी के हर दौर में आपका मार्ग प्रशस्त करेगी। मैं आप सभी को उज्जवल भविष्य के लिए बेसुमार शुभकामनाएं देता हूँ।
- आज हम सभी–छात्र, वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी और पूर्व छात्र मानते हैं कि विश्वविद्यालय पशु विज्ञान में शिक्षण और अनुसंधान के उच्चतम स्तर को प्राप्त करने में सक्षम होगा। हम सब मिलकर विश्वविद्यालय को नई ऊंचाइयों पर ले जाना चाहते हैं। विश्वविद्यालय का प्रथम दीक्षांत समारोह निश्चित रूप से हमारे भाग्य में हमारे विश्वास की पुनः पुष्टि करने का सही क्षण है।
- मैं अपना स्थान गर्हण करने से पहले पुनः महामहिम कुलाधिपति का विशेष अभिनंदन करता हूँ और आप सभी का हार्दिक आभार एवं स्वागत करता हूँ।

नमस्कार! जयहिन्द!